लुई ब्रेल - चित्र पुस्तक

डेविड जॉन, चित्र : एलेक्ज़ेंड्रा

लुई ब्रेल - चित्र पुस्तक

डेविड जॉन, चित्र : एलेक्जेंड्रा
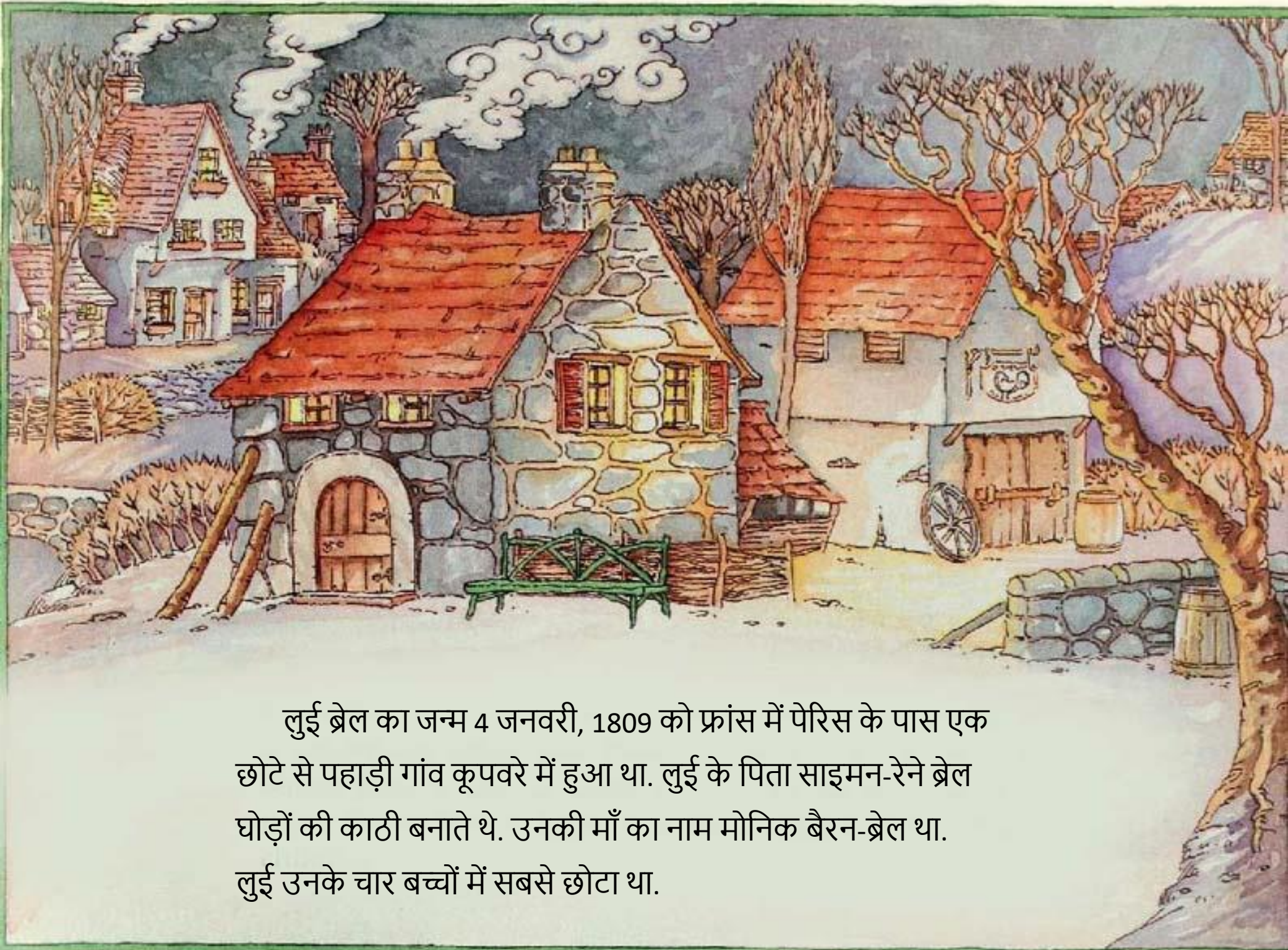
लुई ब्रेल का जन्म 4 जनवरी, 1809 को फ्रांस में पेरिस के पास एक छोटे से पहाड़ी गांव कूपवरे में हुआ था. लुई के पिता साइमन-रेने ब्रेल घोड़ों की काठी बनाते थे. उनकी माँ का नाम मोनिक बैरन-ब्रेल था. लुई उनके चार बच्चों में सबसे छोटा था.

ब्रेल परिवार, तीन कमरों के पत्थर के घर में रहता था. उनका भोजन उनके छोटे से खेत और अंगूरों के बगीचे से आता था. घर के उस पार, साइमन-रेने की एक बड़ी दुकान थी, जिसमें चमड़े के टुकड़े, हथोड़े, तेज चाकू, और नुकीले सूजे और अन्य औज़ार पड़े रहते थे. जबकि पिता काम कर रहे होते थे, तो लुई अक्सर चमड़े के छोटे, बचे हुए टुकड़ों के साथ खेलता था.
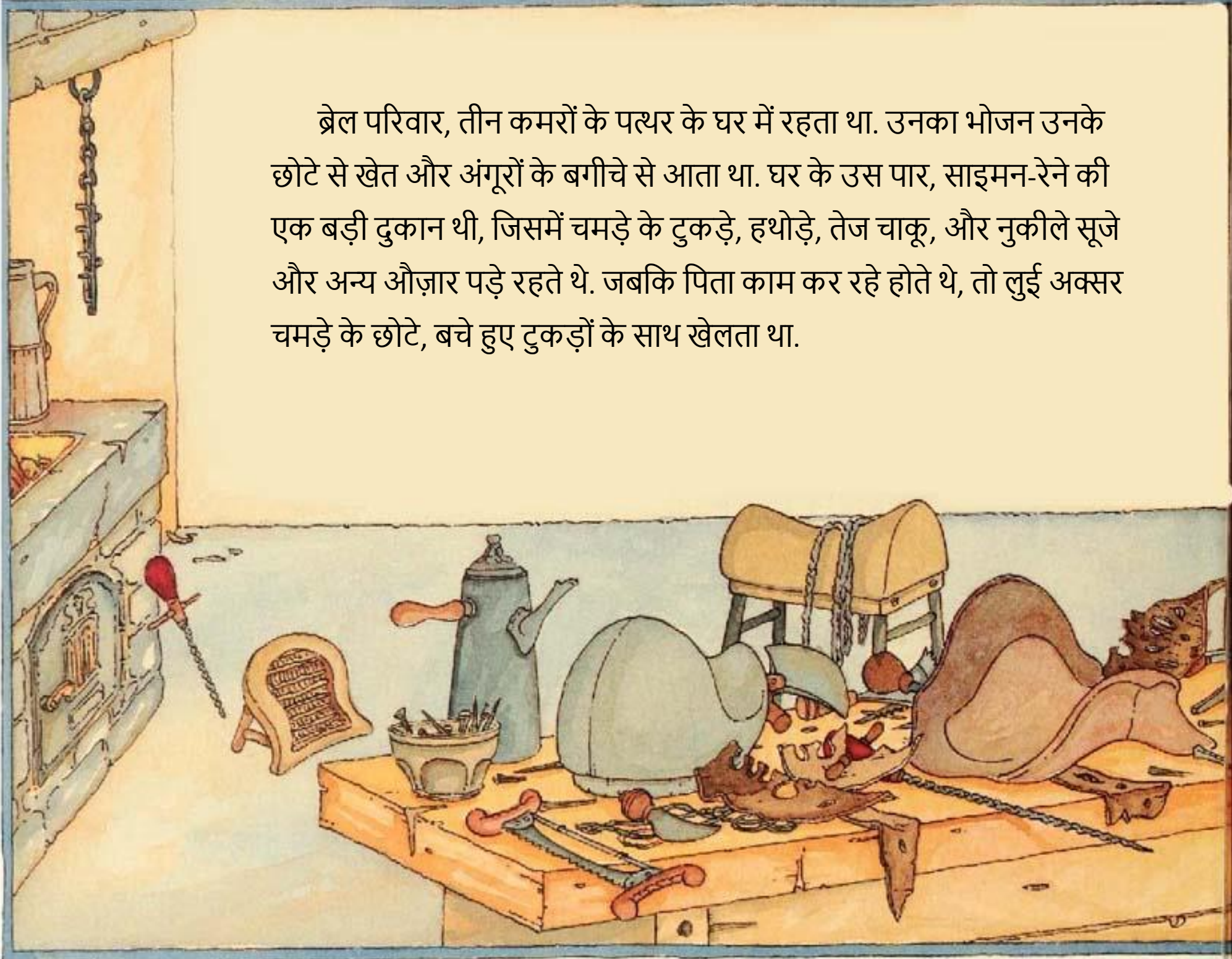
एक गर्मी के दिन, जब उसके पिता एक ग्राहक के साथ बाहर बातचीत कर रहे थे, तीन वर्षीय लुई दुकान में गया. वोअपने पिता द्वारा उपयोग किए गए नुकीले औजारों के साथ खेलने लगा. लुई ने औज़ार के साथ वही किया जैसा कि उसने अपने पिता को अक्सर करते हुए देखा था. लेकिन औज़ार फिसल गया और उसकी आंख में जाकर लगा.

लुई चिल्लाया. उसके माता-पिता उसके पास दौड़े हुए आए.
उन्होंने लुई का खून साफ किया और आंख पर पट्टी बांधी.
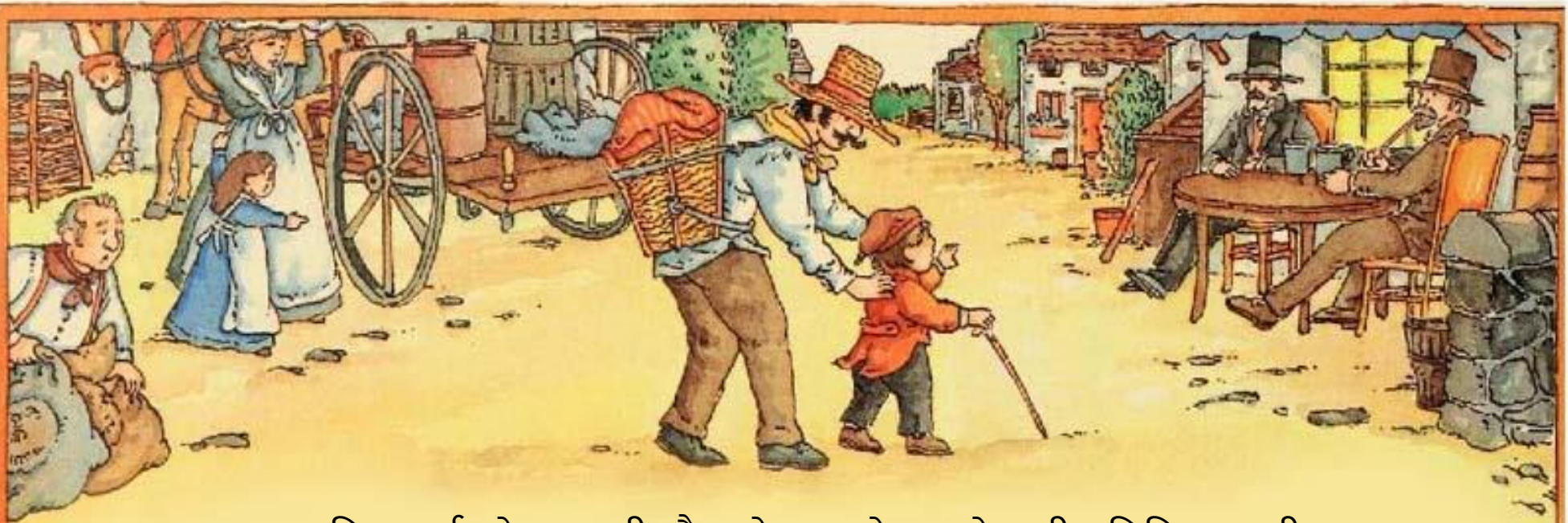
माता-पिता, लुई को एक बूढ़ी औरत के पास ले गए जो ग्रामीण चिकित्सक थी. उसने घाव पर लिली फूल का रस लगाया. फिर माता-पिता, लुई को एक डॉक्टर के पास ले गए. लेकिन कोई भी लुई की आंख बचा नहीं सका. पहली आँख का इन्फेक्शन दूसरी आंख में भी फैल गया. फिर कुछ समय बाद लुई ब्रेल, अंधा हो गया.

लुई को दुबारा फिर से भोजन खाना सीखना पड़ा और चीजों से बिना टकराए कैसे चलना है, वो भी सीखना पड़ा.

लुई के पिता ने उसके लिए एक बेंत बनाया. चलते समय लुई उस बेंत से अपने सामने जमीन को मारकर यह सुनिश्चित करता था कि रास्ता साफ है. और जब लुई कहीं जाता था तो वो अपने कदम गिनता था. फिर वापस लौटने के लिए उसे कितने कदम चलने हैं वो उसे याद रहते थे.
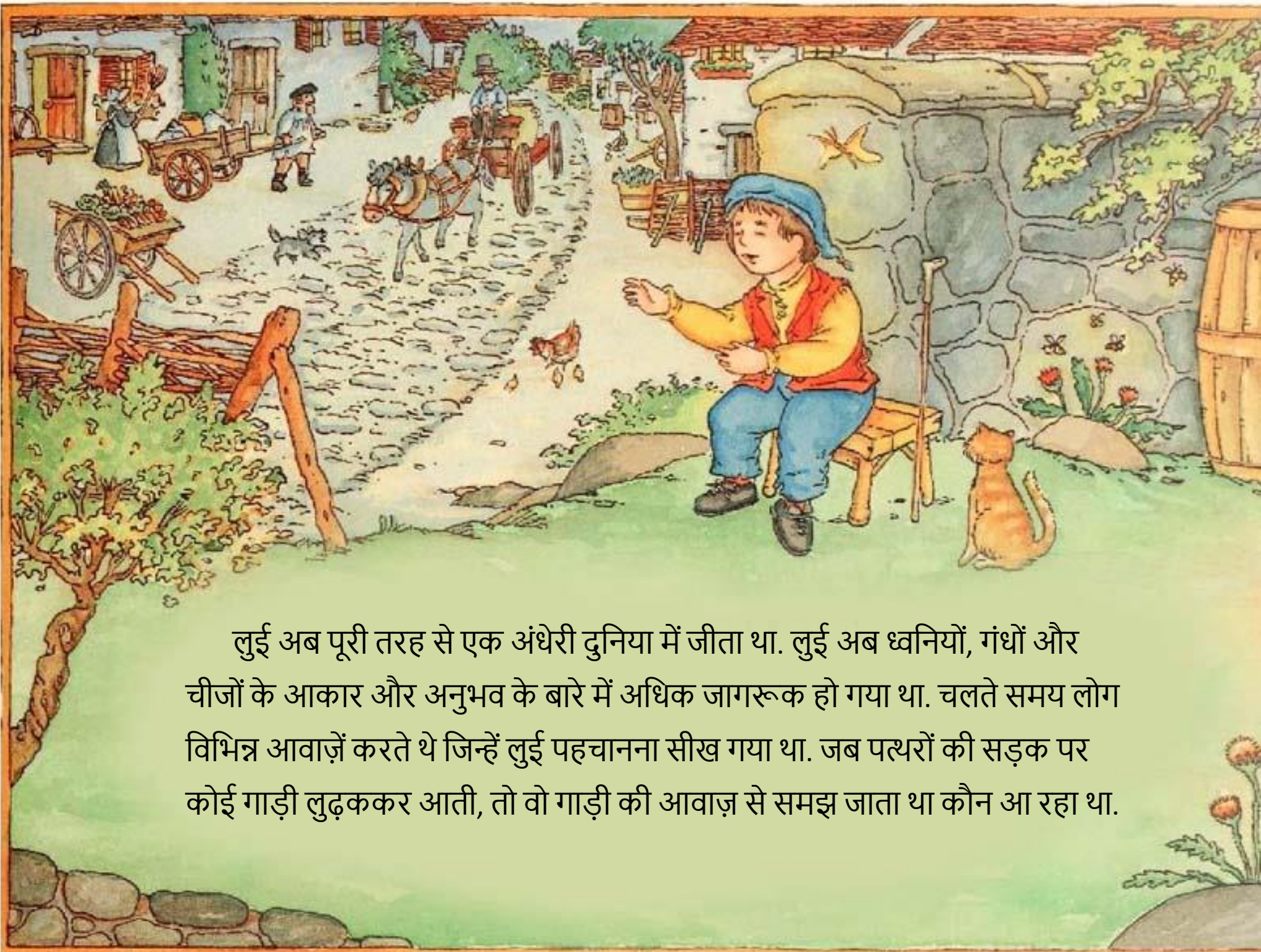
लुई अब पूरी तरह से एक अंधेरी दुनिया में जीता था. लुई अब ध्वनियों, गंधों और चीजों के आकार और अनुभव के बारे में अधिक जागरूक हो गया था. चलते समय लोग विभिन्न आवाज़ें करते थे जिन्हें लुई पहचानना सीख गया था. जब पत्थरों की सड़क पर कोई गाड़ी लुढ़ककर आती, तो वो गाड़ी की आवाज़ से समझ जाता था कौन आ रहा था.

1800 के दशक की शुरुआत में फ्रांस युद्ध में फंसा था. फ्रांस के सम्राट नेपोलियन ने पूरे यूरोप और रूस में लड़ने के लिए अपनी विशाल सेनाएं भेजी थीं. शुरू में वे विजयी हुए, लेकिन 1814 तक फ्रांसीसी सेनाएं हार गई थीं और उन्हें घर वापस लौटने की जल्दी थी.

अप्रैल 1814 में दुश्मन रूसी सैनिकों ने, कूपवरे पर हमला किया और फिर वहां पर रहने और खाने की मांग की. अगले दो वर्षों तक कई रूसी सैनिक ब्रेल के घर के सामने से गुजरते रहे. युवा लुई के लिए उन अजनबियों के साथ रहना भयावह रहा होगा जिन्हें वो न तो देख सकता था और न ही उनकी भाषा समझ सकता था.
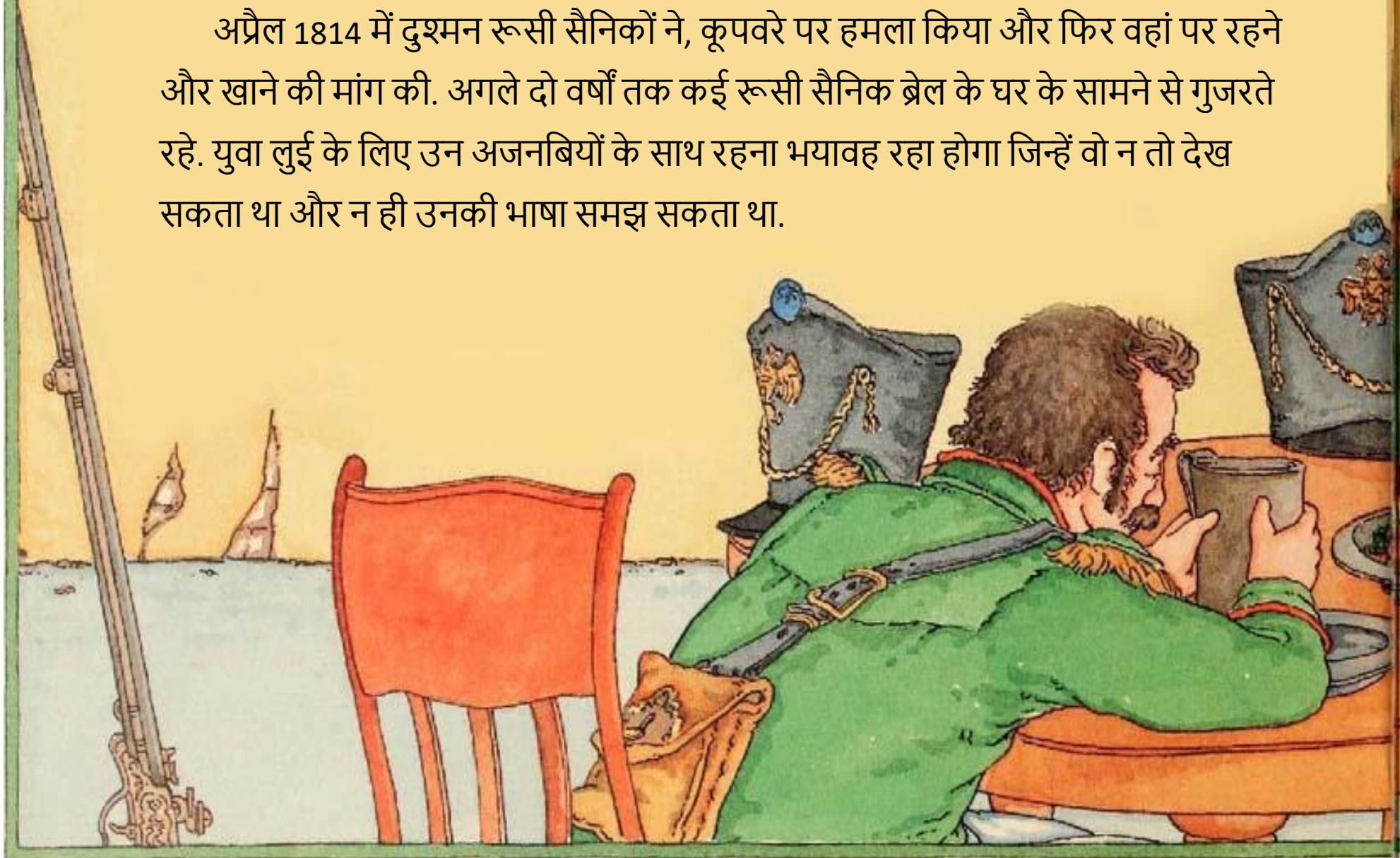
1815 में एक नए चर्च के पुजारी, जैक्स पल्लू, कूपवरे आए. वो लुई के पहले शिक्षक बने. उन्होंने ही लुई को बाइबल सिखाई. उन्होंने लुई को, जानवरों को उनकी आवाज़ों और फूलों को उनकी गंध से पहचानना सिखाया.

लुई के पिता ने अक्षरों के लिए गोल-मत्थों वाली कीलों को एक लकड़ी के बोर्ड में ठोका. लुई ने कीलों के मत्थों को छूकर वर्णमाला सीखी. फिर पिता ने उसे अक्षरों को जोड़ना और शब्दों को कैसे बनाया जाए यह सिखाया.

अगले साल एक नए स्कूल मास्टर, एंटोनी बेचेरेट, कूपवरे में आए. उस समय किसी नेत्रहीन बच्चे का स्कूल जाना एकदम असामान्य बात थी. लेकिन लुई विशेष रूप से होशियार था, और एंटोनी बेचेरेट उसे सिखाने के लिए उत्सुक थे.

लुई केवल सुनकर ही सीख सकता था. वो उन किताबों को नहीं पढ़ सकता था जो दूसरे बच्चे पढ़ते थे. बहरहाल, उनकी याददाश्त अच्छी थी और वो एक बढ़िया छात्र था.

फरवरी 1819 में लुई को नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड चिल्ड्रेन में रहने और अध्ययन करने के लिए पेरिस भेजा गया. यह नेत्रहीनों के लिए दुनिया का पहला स्कूल था, जिसकी स्थापना 1784 में वैलेन्टिन हाउ ने की थी.

जब लुई स्कूल में आया, तो वो एक धूमिल, पांच मंजिला इमारत में था. बिल्डिंग के खिड़कियों पर लोही की मोटी छड़ें लगी थीं. तीस साल पहले, फ्रांसीसी क्रांति के दिनों में, वो इमारत एक जेल थी. लुई ब्रेल अपने बाकी जीवन भर, उस स्कूल में ही रहा.
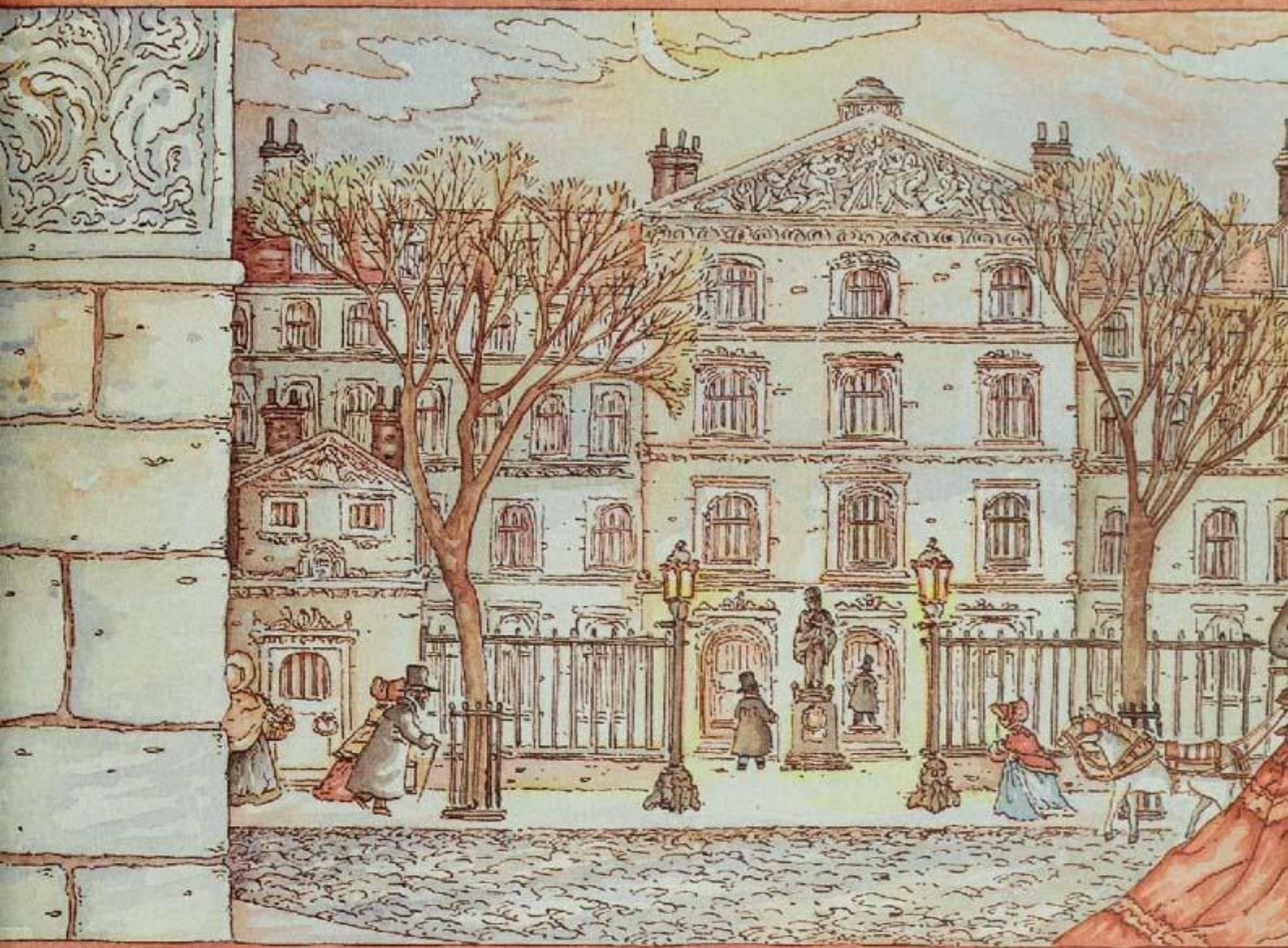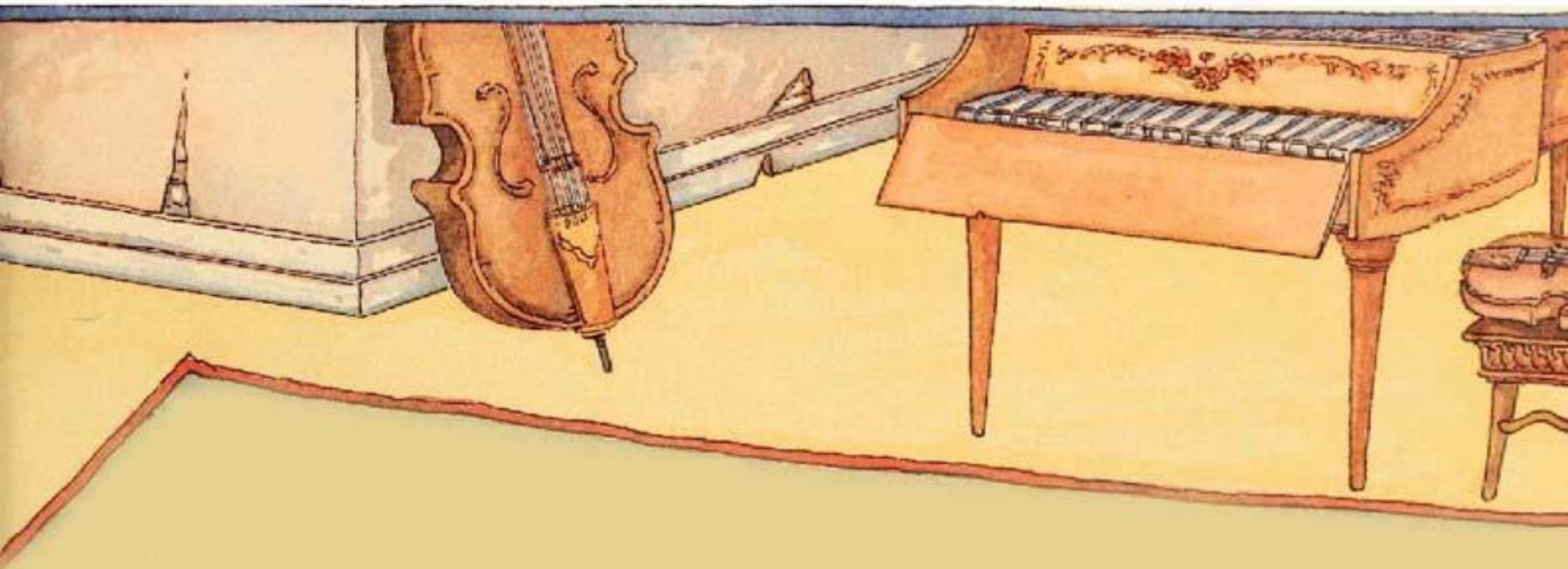
लुई के पढ़ने के लिए संस्थान में किताबें थीं. उन किताबों के पन्नों पर उभरे हुए अक्षर थे जिन्हें वो महसूस कर सकता था. अक्षर बहुत बड़े थे. वो किताबें भी बड़ी और भारी थीं. प्रत्येक अक्षर को अपनी उंगलियों से ट्रेस करना एक धीमी प्रक्रिया थी. उसे "पी" और "आर", साथ में "ई" और "एफ" के बीच अंतर करना मुश्किल था. लेकिन अंत में लुई उन किताबों को पढ़ना सीख गया.

स्कूल में इतिहास, भूगोल, गणित, लैटिन और व्याकरण, संगीत की कक्षाएं और नियमित पाठ होते थे. लुई को विशेष रूप से संगीत पसंद था. उसके पास संगीत की प्राकृतिक प्रतिभा थी. उसने पियानो, ऑर्गन, वायलिन और चेलो बजाना सीखा. 1834 से शुरू में लुई ने कुछ पेरिस के चर्चों में ऑर्गन भी बजाया.

1821 में लुई ब्रेल को सोनोग्राफी यानि - रात्रि लेखन सिखाई गई, जो उभरी हुई बिंदियों और डैश का एक कोड था. इसका आविष्कार फ्रांसीसी सेना के एक कप्तान चार्ल्स बार्बियर ने किया था, ताकि सैनिक बिना दीपक जलाए अंधेरे में किसी संदेश को पढ़ सकें. सैनिक, संदेशों को छूकर पढ़ सकते थे.

लुई ब्रेल सोनोग्राफी से उत्साहित था. वो इसे पढ़ने और लिखने के लिए इस्तेमाल कर सकता था. लेकिन उसे जल्दी ही उस प्रणाली की समस्यायें भी समझ में आईं.

एक शब्द को लिखने में उस प्रणाली में बहुत सारे बिंदु लगते थे. उसमें संख्याओं या विराम चिह्नों के लिए कोई कोड नहीं था. सोनोग्राफी एक ध्वन्यात्मक प्रणाली थी जिसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए प्रतीक होता था, लेकिन प्रत्येक अक्षर के लिए नहीं. इसलिए उसके उपयोग से लुई हिज्जे करके पढ़ नहीं सकता था.
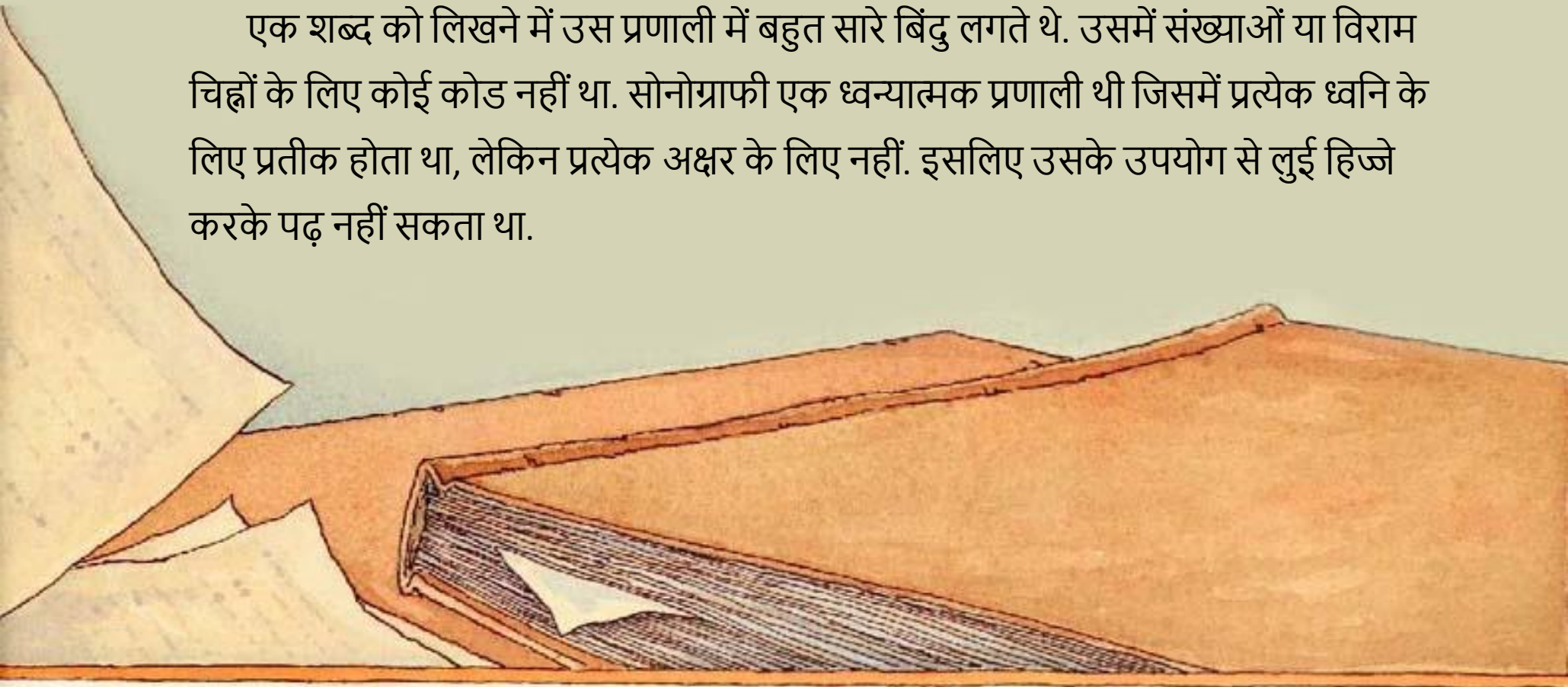
लुई ने अपने कोड के साथ प्रयोग करना शुरू किया. अपने सहपाठियों के सो जाने के बाद वो देर रात तक प्रयोग करता रहता था. वो सुबह जल्दी उठकर कक्षाओं से पहले भी अपने कोड पर काम करता था. 1824 में लुई ब्रेल ने स्कूल के प्रिंसिपल डॉ. आंद्रे पिग्नियर को अपनी प्रणाली का एक प्रदर्शन दिखाया.

लुई ब्रेल के कोड में तीन बिंदुओं की दो पंक्तियों में उभरी हुई बिंदियों का उपयोग किया गया था, जैसे कि किसी डोमिनो पर छह बिंदियां होती हैं. उसे इस तरह तिरेसठ अलग-अलग संयोजन (कॉम्बिनेशन) मिले - जो वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए और विराम चिह्न और संख्याओं को दर्शाने के लिए पर्याप्त थे. बाद में लुई ने उभरी हुई बिंदियों की संगीत नोट्स के लिए भी प्रणाली विकसित की.

ब्रेल की नई प्रणाली से सोनोग्राफी की तुलना में, सीखना और पढ़ना बहुत आसान था.

1825 तक लुई ब्रेल और उसके मित्र गेब्रियल कॉथियर ने पहला ब्रेल लेखन बोर्ड बनाया. अब लुई, गेब्रियल और अन्य अंधे लोग लिख भी सकते थे.

1826 में लुई ब्रेल को नेत्रहीनों की राष्ट्रीय संस्थान में एक सहायक और दो साल बाद में एक पूर्ण शिक्षक बनाया गया. लुई ने गणित, भूगोल, व्याकरण और संगीत पढ़ाया. स्कूल के अन्य शिक्षक पाठ न समझने वाले बच्चों को सजा देते थे लेकिन लुई ब्रेल अपने छात्रों के साथ हमेशा प्रेम से पेश आता था.

शुरू में बहुत से लोग ब्रेल की नई प्रणाली को इस्तेमाल करने के खिलाफ थे. उन्हें लगा कि ब्रेल का नया कोड अपनाना महंगा होगा. उसका मतलब होगा कि नेत्रहीनों के लिए नए सिरे से किताबें तैयार करनी होंगी. दृष्टिवान लोगों को पुरानी व्यवस्था से कोई दिक्कत नहीं थी. वे इसे आसानी से पढ़ सकते थे और इसलिए उन्हें परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं दिखी.

राष्ट्रीय संस्थान में अभी भी पुरानी किताबों का इस्तेमाल होता था. इसलिए छात्रों ने अपने ही दम पर लुई की नई प्रणाली को आजमाया. उन्हें ब्रेल की नई प्रणाली पसंद आई. डॉ. पिग्नियर भी चाहते थे कि उसे स्कूल में अपनाया जाए. उन्होंने यह भी महसूस किया कि ब्रेल कोड नेत्रहीनों के लिए फ्रांस का आधिकारिक लेखन कोड बन जाए. लेकिन राष्ट्रीय संस्थान के निदेशक इसके खिलाफ थे. 1840 में, जब उन्हें पता चला कि स्कूल, ब्रेल में छपी पुस्तकों का उपयोग कर रहा था, तो उन्होंने डॉ. पिग्नियर को राष्ट्रीय संस्थान छोड़ने के लिए मजबूर किया.

दृष्टिवान लोग ब्रेल के सिक्स-बिंदियों वाले सिस्टम को नहीं सीख रहे थे. अंधे उन्हें लिख नहीं सकते थे. इसलिए, 1839 में लुई ब्रेल ने एक प्रणाली का आविष्कार किया जिसे उन्होंने रैफिग्राफी कहा, जिसमें उभरी हुई बिंदियों का उपयोग करके अक्षरों के आकार का निर्माण होता था. अंधे लोग उन अक्षरों को महसूस कर सकते थे. दृष्टिवान लोग भी उन्हें देख सकते थे.
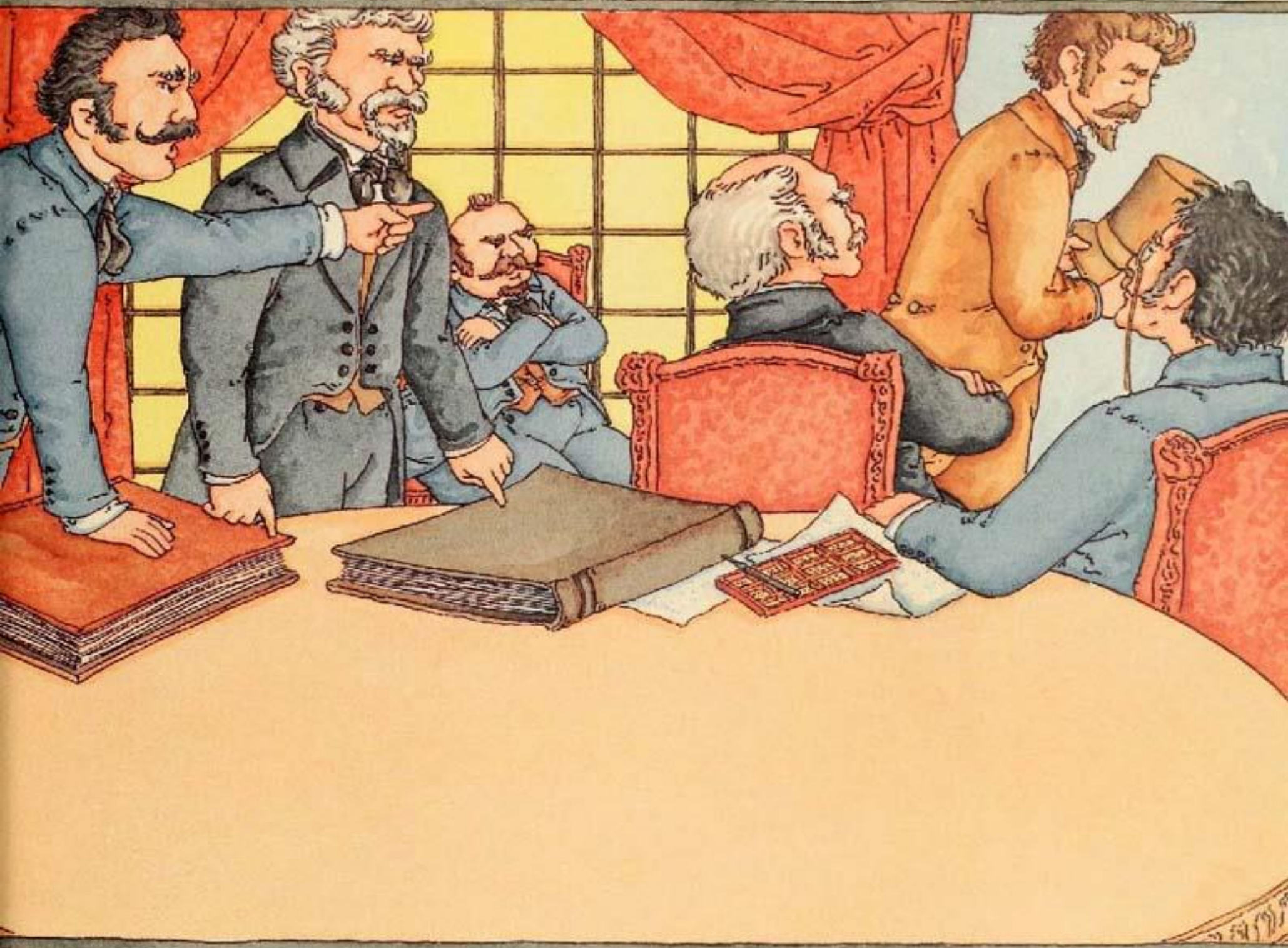
जबकि लुई ब्रेल अपने कोड पर काम कर रहे थे तब उन्होंने संस्थान में पढ़ाना जारी रखा. लेकिन पाठों के बीच में उन्हें अक्सर रुकना पड़ता था. उन्हें खांसी हो गई थी. 1835 तक उनकी खाँसी, तपेदिक में विकसित हो गई जो 1800 के दशक में एक घातक बीमारी थी. कई बार कमज़ोरी के कारण वो पढ़ाने में असमर्थ होते थे. स्वच्छ देशी हवा में सांस लेने और आराम करने के लिए वो अक्सर कूपवरे में घर चले जाते थे.

फिर, 1851 के अंत में, लुई ब्रेल गंभीर रूप से बीमार हो गए. अपने बिस्तर से उन्होंने अपने दोस्तों से कहा, "मुझे विश्वास है कि पृथ्वी पर मेरा मिशन पूरा हो चुका है." उनके तैंतालीसवें जन्मदिन के ठीक बाद 6 जनवरी, 1852 को उनका निधन हो गया.
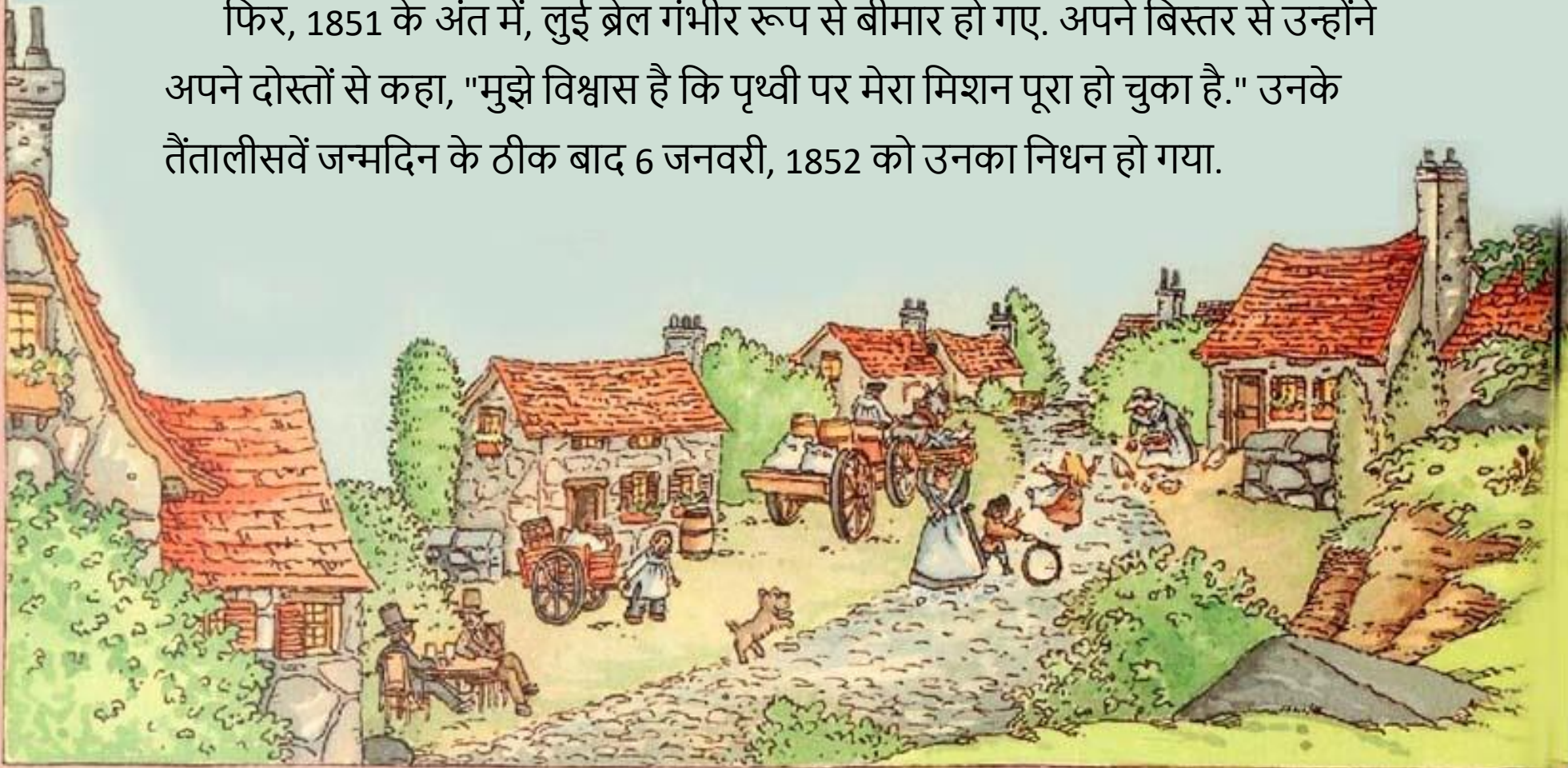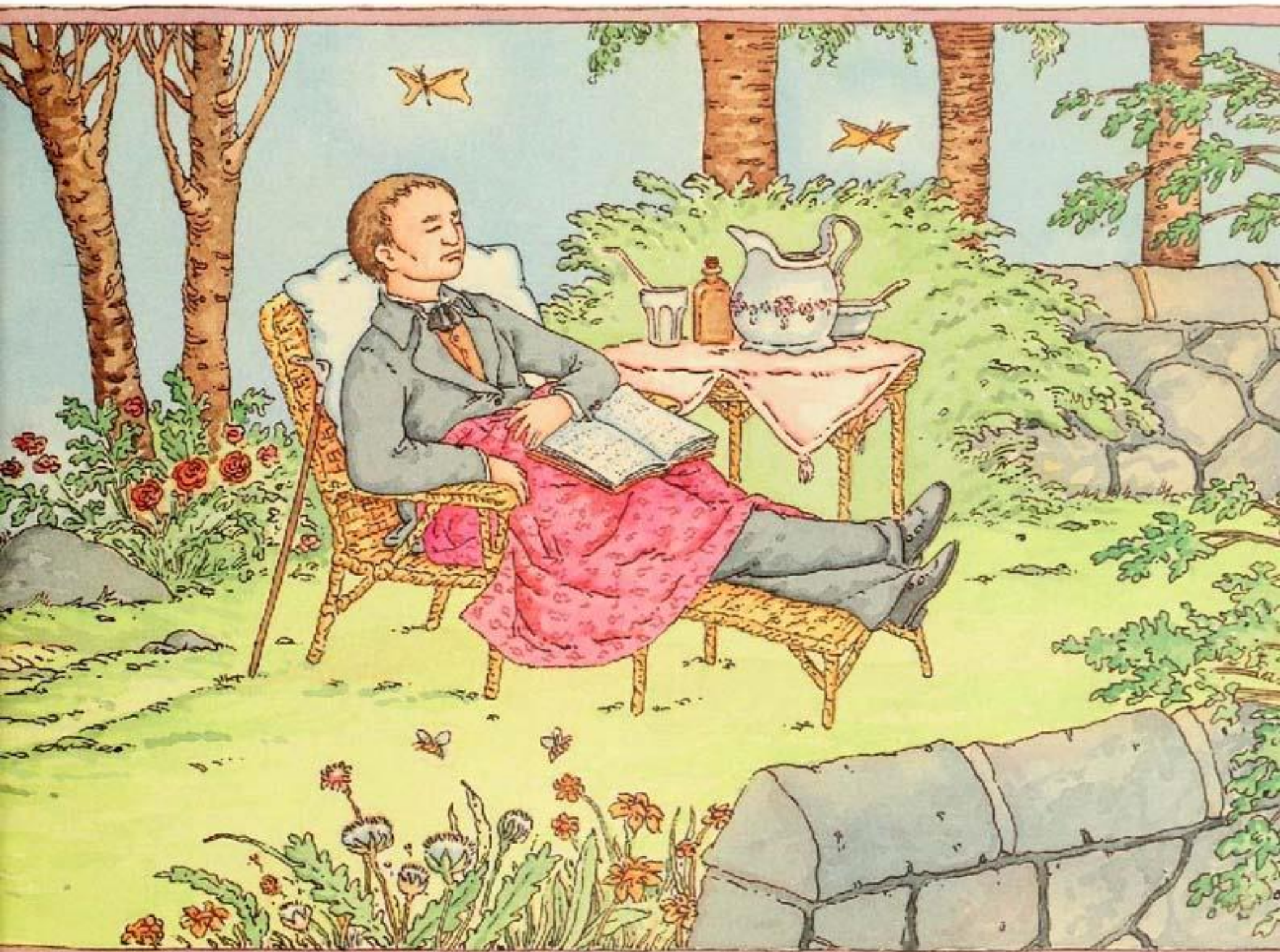
1852 में लुई ब्रेल की उपलब्धियों के बारे में लोगों को व्यापक रूप से पता नहीं था. लेकिन सदी के अंत तक, उनका छह-बिंदियों वाला कोड, जिसे "ब्रेल" के रूप में जाना जाता है, कई भाषाओं में लागू किया गया था और दुनिया भर में उसका उपयोग हो रहा था.

हेलेन केलर, जो नेत्रहीन और बहरी थीं ने लुई ब्रेल को "ईश्वर के साहस और सोने का दिल" वाला एक प्रतिभाशाली इंसान बताया. उन्होंने लिखा है कि ब्रेल ने "मेरे लिए पढ़ना सुखद बनाया... जिससे मेरे आस-पास की दुनिया खजाने से चमक उठी," उन्होंने लिखा कि लुई ब्रेल ने "इंद्रियों से अपंग लाखों लोगों के लिए निराशाजनक अंधेरे से चढ़ने के लिए एक बड़ी, दृढ़ सीढ़ी का निर्माण किया."

लेखक का नोट

वर्तमान में उचित उपचार से लुई ब्रेल, आंख की चोट के परिणामस्वरूप नेत्रहीन नहीं होते. आज लुई ब्रेल को मारने वाली बीमारी तपेदिक का भी सफल इलाज उपलब्ध है.

लुई ब्रेल ने सबसे पहले डॉट्स और डैश के साथ प्रयोग किया. जब उन्होंने देखा कि बिंदियों को महसूस करना ज़्यादा आसान था, तब उन्होंने डैश को छोड़ दिया.

1952 में, लुई ब्रेल की मृत्यु की सौवीं वर्षगांठ पर, उनके अवशेषों को पेरिस में पंथियन में ले जाया गया. वहां उन्हें अन्य महान फ्रांसीसी हीरोज के बीच आराम करने के लिए रखा गया.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1809 का जन्म 4 जनवरी को फ्रांस के कूपवरे गांव में हुआ.

1812 अपने पिता की दुकान में एक दुर्घटना में लुई अंधे हुए.

1819 नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड चिल्ड्रेन, पेरिस में अध्ययन शुरू किया.

1824 ने अपने पहले उभरी बिंदियों वाले अक्षरों पर काम पूरा किया.

1826 राष्ट्रीय संस्थान में सहायक शिक्षक नियुक्त.

1835 तपेदिक से बीमार हुए.

1839 ने रेफिग्राफी का आविष्कार किया, जिसमें उभरे हुए बिंदुओं के साथ वर्णमाला बनाई गई, ताकि नेत्रहीन लोग छह-बिंदियों वाली प्रणाली से अपरिचित दृष्टि वाले लोगों के लिए लिख सकें.

1852 जनवरी 6 को, पेरिस में मृत्यु.